YUVA EXPLORERS

ISSUE 2 | APRIL 2026
HINDI

कई वर्षों तक भारत का इतिहास पश्चिमी, औपनिवेशिक सोच के माध्यम से लिखा गया था, जिसने घटनाओं की व्याख्या और समझ को आकार दिया और आज हम अपने देश के बारे में कैसे सोचते हैं, इसे भी प्रभावित किया। इसका अर्थ यह भी था कि कई कहानियाँ अधूरी महसूस होती थीं। आज हम अपने शब्दों में अपना इतिहास साझा करने के अवसर का उत्सव मना रहे हैं।

हम भारतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुसंधान फाउंडेशन (संक्षेप में FIHCR) की टीम हैं। हम अपने देश के समृद्ध इतिहास, आकर्षक परंपराओं एवं अद्भुत नायकों को खोजने और उन्हें सराहने में मदद करते हैं।

क्या आप हमारे YUVA कार्यक्रम के बारे में जानते हैं? यदि आपकी आयु 6 से 18 वर्ष के बीच है, तो YUVA आपके लिए ही बनाया गया है! हमारा लक्ष्य आपके लिए इतिहास को मज़ेदार बनाना है।

इस पत्रिका के साथ हर दो माह में हम आपको इतिहास में झाँकने का मौका देते हैं। हम भारत के रोमांचक, छुपे हुए पहलुओं को उजागर करेंगे और उन गुमनाम बहादुर नायकों और नेताओं के बारे में जानेंगे जिन्होंने हमारे राष्ट्र के निर्माण में मदद की।

सीखने और आनंद लेने के लिए तैयार हो जाइए!

डॉ. विक्रम संपत,

संस्थापक एवं निदेशक, एफ.आई.एच.सी.आर.

लेखक, इतिहासकार, रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी, यू.के. के फेलो

संस्थापक का संदेश

FIHCR की स्थापना एक सरल उद्देश्य के साथ की गई थी: भारत को अपनी कहानी ईमानदारी और दृढ़ता के साथ फिर से खोजने के लिए प्रोत्साहित करना। हमारे बच्चे ऐसी कहानियों के हकदार हैं जो जीवंत हों, ऐसी कहानियाँ जो कल्पना, साहस, विद्वत्ता और विरासत की बात करती हों। जब युवा मन जिज्ञासा और आश्चर्य के साथ इतिहास से जुड़ते हैं, तो वे शक्ति और स्पष्टता में निहित भविष्य को आकार देते हैं।

YUVA उस भावना का उत्सव मनाता है। यह छात्रों को अपरिचित रास्तों पर चलने, निडर होकर प्रश्न पूछने और अतीत के साथ अपने स्वयं के संबंध को खोजने का अवसर देता है। यह कार्य असीम आनंद देता है क्योंकि इतिहास कभी स्थिर नहीं होता। इसमें खोजने के लिए हमेशा कुछ-न-कुछ नया होता है।

सीखने और पुनर्खोज की इस यात्रा का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद।

नमस्कार, साथी खोजकर्ताओं!

मेरा नाम कवि है, मैं वह तेज़ नज़रों वाला कौआ हूँ जिसने सदियों से भारत की कहानी को आसमान से देखा है।

लोग इतिहास को किताबों में कैद समझते हैं, लेकिन मुझे यहाँ से एक अलग कहानी नज़र आती है! जिन सड़कों पर आप चलते हैं, जो पानी आप पीते हैं और यहाँ तक कि जिस तरह से आप अपना नाम लिखते हैं, वे सभी अतीत की घटनाओं से प्रभावित हैं।

इस अंक में हम समय के माध्यम से एक 'खोज-यात्रा' (scavenger hunt) पर निकल रहे हैं! हम 'वॉर अलर्ट' के लिए 326 ईसा पूर्व (BCE) में झेलम के तट से शुरुआत करेंगे, जहाँ राजा पुरु का सामना मैसेडोनिया के सिकंदर से होगा। फिर हम उन स्कूलों का दौरा करेंगे जो लगभग 3000 साल पहले अस्तित्व में थे, जहाँ आपको सीखने के लिए बैग, पेन या नोटबुक की ज़रूरत नहीं थी और फिर भी छात्र पूरे विश्वकोश को याद रखने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल सुपर कंप्यूटर की तरह करते थे!

आप 'लेट्स लर्न ब्राह्मी' में भारत की 'मातृ लिपि' का अभ्यास कर सकते हैं और हमारे 'व्हिस्पर टेस्ट' में जाँच सकते हैं कि आपकी याददाश्त किसी प्राचीन विद्वान जितनी तेज़ है या नहीं। इसके बाद हम उन 'महान विद्वानों' से मिलेंगे जिन्होंने सर्जरी, व्याकरण एवं सितारों पर दुनिया की पहली किताबें लिखी थीं।

अंत में टीचर्स कॉर्नर के लिए हम बेंगलुरु के ऊपर से उड़ान भरेंगे और देखेंगे कि राजा केम्पेगौड़ा प्रथम द्वारा डिजाइन की गई 500 साल पुरानी 'जल श्रृंखला' आज भी कैसे अस्तित्व में है।

इतिहास कोई ऐसी उबाऊ विषय नहीं है जो बहुत पहले घटित हुई हो। यह तो हर पल आपके आस-पास ही हो रहा है! इसलिए अपनी आँखें खोलिए और आइए, किताबों से परे इतिहास को और करीब से देखें!

— कवि, मुख्य अन्वेषक

प्राचीन भारत का समय

युद्ध की चेतावनी: एक विदेशी राजा ने भारत में प्रवेश किया है!

सीधा प्रसारण

युद्ध के मैदान से (326 ईसा पूर्व)

मैं कवि झेलम नदी के तट से खबर दे रहा हूँ और कुछ बहुत बड़ा हो रहा है!

दूर देश के एक शक्तिशाली राजा, मैसेडोनिया के सिकंदर ने अपनी विशाल सेना के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया है। जहाँ तक मेरी नज़र जा रही है, सैनिक, घोड़े और युद्ध के उपकरण ही दिखाई दे रहे हैं!

लेकिन रुकिए! केवल वही तैयार नहीं है! पौरव साम्राज्य के एक बहादुर भारतीय शासक, राजा पुरु झेलम नदी के पास उनका सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। और अंदाज़ा लगाइए क्या? राजा पुरु के पास कुछ ऐसा है जो सिकंदर ने पहले कभी नहीं देखा था - युद्धक हाथी!

कई दिनों से दोनों सेनाएं विपरीत तटों से एक-दूसरे पर नज़र रख रही हैं। और अब सिकंदर रात के समय अपनी चाल चल रहा है, जब दुश्मन सो रहा है। वह चुपके से दूसरे बिंदु से नदी पार कर रहा है। सिकंदर ने अभी-अभी एक दो-तरफ़ा हमला शुरू किया है, जिससे पुरु पर एक साथ दो तरफ से हमला किया जा रहा है!

युद्ध भीषण है। घोड़े दौड़ रहे हैं, सैनिक आपस में भिड़ रहे हैं और विशाल युद्धक हाथी युद्ध के मैदान में गरज रहे हैं, जबकि झेलम नदी उफान पर है!

अब लगभग भोर होने वाली है। सिकंदर युद्ध जीतने में सफल रहा है और पराजित राजा पुरु को उसके सामने लाया जा रहा है। सिकंदर ने अभी-अभी पुरु से पूछा कि वह कैसा व्यवहार चाहता है, जिस पर पुरु ने निडर होकर उत्तर दिया, 'एक राजा की तरह!' सिकंदर हार के बावजूद उनके साहस से बहुत प्रभावित दिख रहा है।

यह अद्भुत है, मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं क्या देख रहा हूँ! सिकंदर ने पुरु को हारने के बाद भी फिर से राजा बना दिया है!

झेलम का युद्ध कुछ दिन पहले समाप्त हुआ था। लेकिन इसने भारी नुकसान पहुँचाया है। सिकंदर के सैनिक विद्रोही लग रहे हैं और आगे बढ़ने से इनकार कर रहे हैं। एक सैनिक ने हमें बताया कि भारतीयों के कड़े प्रतिरोध ने उन्हें हिलाकर रख दिया है।

शक्तिशाली सिकंदर अपनी सेना के फैसले को स्वीकार करने के लिए मजबूर है।

और इस तरह दुनिया के सबसे महान विजेताओं में से एक का मार्च ब्यास नदी पर आकर रुक जाता है!

बिना किताबों के सीखना!
प्राचीन भारत में स्कूल

सोचिए कि आप बिना भारी बैग के स्कूल जा रहे हैं या आपसे नोटबुक भरने के लिए नहीं कहा जा रहा है। यह एक सपने जैसा लगता है, है ना? खैर, अगर आप कभी लगभग 3000 साल पहले के प्राचीन भारत की यात्रा करते, तो आप उसी वास्तविकता में जी रहे होते। प्राचीन भारत में छात्र अक्सर चीज़ें लिखते नहीं थे। उन्होंने सुना, दोहराया और कंठस्थ कर लिया। इसे महान 'मौखिक परंपरा' कहा जा सकता है, जहाँ शिक्षक पाठ करते थे या बोलते थे और छात्र उन्हें तब तक दोहराते थे जब तक कि वे सब कुछ कंठस्थ न कर लें।

आप शायद सोच रहे होंगे, कोई इतनी सारी जानकारी कैसे याद कर सकता है? निश्चित रूप से, उनके पास कुछ तरकीबें थीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने 'पदपाठ' तकनीक का उपयोग किया जहाँ वे पाठ को शब्द दर शब्द सुनाते थे, या 'क्रमपाठ' जो शब्दों को एक क्रम में जोड़ता था तथा सर्वाधिक उन्नत 'घनपाठ' जो एक जटिल पाठ विधि का उपयोग करता था।

तो, वे क्या सीख रहे थे और याद कर रहे थे? प्राचीन भारतीय पाठ्यक्रम ने यह सुनिश्चित किया कि स्नातक होने वाले छात्र 'बहुश्रुत' (polymath - एक बहुश्रुत वह व्यक्ति होता है जो बहुत सी चीजों के बारे में बहुत कुछ जानता है!) हों। इसे सुनिश्चित करने के लिए उन्हें वेदों की शिक्षा दी गई, जो हमारे ज्ञात सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ हैं।

क्या आप जानते हैं?

वेदों को कुछ सौ साल बाद तक लिखा नहीं गया था और ज्ञान केवल स्मरण तकनीकों के माध्यम से ही संरक्षित किया गया था।

चार वेद हैं, अर्थात् **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद,** जो प्राचीन ज्ञान के विश्वकोश की तरह हैं। उनमें खगोल विज्ञान, कृषि, दर्शन, भाषा विज्ञान और कई अन्य विषयों पर विचार शामिल हैं। वेदों में महारत हासिल करने के लिए छात्रों को छह सहायक विषय पढ़ाए जाते थे जिन्हें वेदांग कहा जाता था। इनमें शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, कल्प एवं ज्योतिष शामिल थे। कुल मिलाकर इनमें कई क्षेत्रों को शामिल किया गया था। इसलिए, प्राचीन भारत में एक विद्यार्थी ऐसे पाठ्यक्रम का पालन करता था जो अपने समय से कहीं आगे था।

विस्पर टेस्ट

क्या याददाश्त किसी कहानी को बदल सकती है?

कई शताब्दियों तक प्राचीन भारत में ज्ञान मुख्य रूप से स्मृति और पाठ के माध्यम से हस्तांतरित किया जाता रहा। लेकिन क्या आपने कभी 'चाइनीज विस्पर्स' खेला है? इस खेल में एक व्यक्ति लाइन में अगले व्यक्ति के कान में एक वाक्य फुसफुसाता है। जब तक यह संदेश अंतिम व्यक्ति तक पहुँचता है, यह अक्सर पूरी तरह से बदल जाता है!

आइए एक त्वरित परीक्षण करें।

चरण 1 इस वाक्य को केवल एक बार ध्यान से पढ़ें: "एक बुद्धिमान शिक्षक हर जिज्ञासु छात्र के साथ ज्ञान साझा करता है।"

चरण 2 अपनी आँखें बंद करें और 10 से 1 तक उल्टी गिनती गिनें। ध्यान रखें कि अपने मन में वाक्य को न दोहराएँ। 10 सेकंड के बाद याददाश्त से वाक्य लिखें।

चरण 3 मूल वाक्य के साथ इसकी तुलना करें। क्या हर शब्द वही रहा? या कुछ बदल गया?

ब इसकी कल्पना करें...

क्या होगा यदि किसी वाक्य को 10 सेकंड के लिए नहीं, बल्कि 10 वर्षों तक याद रखना पड़े?

जब ज्ञान केवल स्मृति के माध्यम से हस्तांतरित किया जाता है, तो समय के साथ छोटे बदलाव आ सकते हैं - ठीक वैसे ही जैसे 'चाइनीज विस्पर्स' में होता है। यही कारण है कि प्राचीन विद्वानों ने वेदों जैसे ग्रंथों को बड़ी सटीकता के साथ याद करने के लिए विशेष पाठ तकनीकें विकसित की थीं।

इस पर विचार करें

आपको क्या लगता है कि लोगों ने आखिरकार चीजों को लिखना क्यों शुरू किया?

- विचारों को ठीक उसी रूप में सुरक्षित रखने के लिए जैसे वे थे
- अधिक लोगों के साथ ज्ञान साझा करने के लिए
- समय के साथ गलतियों को शामिल होने से रोकने के लिए

या शायद... ये तीनों?

जब ज्ञान ने लिपि खोजी

मौखिक परंपरा की चुनौतियों से पार पाने के लिए, जहाँ स्मृतियों को पाठ और कहानियों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता था, सूचनाओं को दर्ज करने के लिए लेखन का विचार धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि लगभग 2500 साल पहले लेखन कैसा दिखता था? खैर, आप शायद उन बेतरतीब प्रतीकों की कल्पना करें जो आज हमारे द्वारा देखे जाने वाले अक्षरों की तरह बिल्कुल नहीं दिखते। लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं है। अधिकांश आधुनिक भारतीय लिपियों की उत्पत्ति प्राचीन लिपि ब्राह्मी से हुई है, जिसे सभी आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी माना जाता है।

भाषा और लिपि एक ही चीज़ नहीं हैं।

भाषा वह है जो लोग बोलते हैं (अंग्रेजी और हिंदी)। लिपि वह है जिसमें भाषा लिखी जाती है (रोमन लिपि और देवनागरी लिपि)।

आज हम बिना महसूस किए ही रोमन लिपि का उपयोग करके हिंदी, तमिल, बंगाली, गुजराती और कई अन्य भाषाओं में सामान्य रूप से संवाद करते हैं!

क्या आप जानते हैं?

प्राचीन भारत में एक ही भाषा विभिन्न लिपियों में दिखाई दे सकती थी और एक ही लिपि विभिन्न भाषाओं को दर्ज कर सकती थी। उदाहरण के लिए, अशोक के कई शिलालेख ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का उपयोग करके प्राकृत भाषा की विभिन्न बोलियों में लिखे गए थे।

आइए ब्राह्मी सीखें

नीचे कुछ ब्राह्मी अक्षर सूचीबद्ध किए गए हैं।

𑀲 = sa, 𑀓 = ka, 𑀢 = ta, 𑀭 = r, 𑀮 = la

𑀤 = da, 𑀩 = ba, 𑀫 = ma, 𑀦 = na, 𑀳 = ha

अब नीचे दी गई ब्राह्मी लिपि में लिखे गए अंग्रेजी शब्दों को पहचानें।

1. 𑀓𑀮𑀭 2. 𑀩 𑀢𑀦 3. 𑀲𑀫𑀭

4. 𑀢𑀦𑀮 5. 𑀫𑀤𑀭

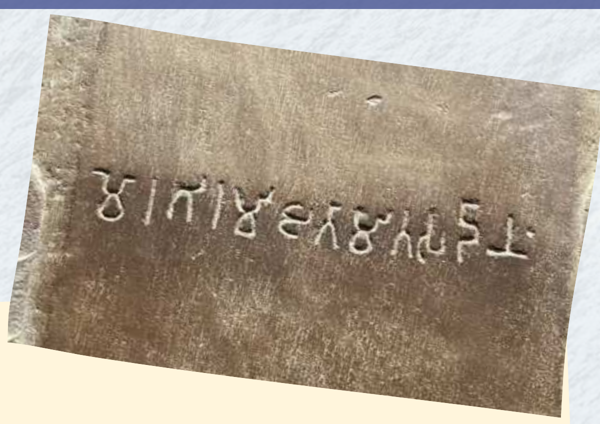

यह भरहुत स्तूप के एक स्तंभ पर ब्राह्मी लिपि में लिखा एक संदेश है (जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में रखा है)।

क्या आप पता कर सकते हैं कि इसमें क्या लिखा है?

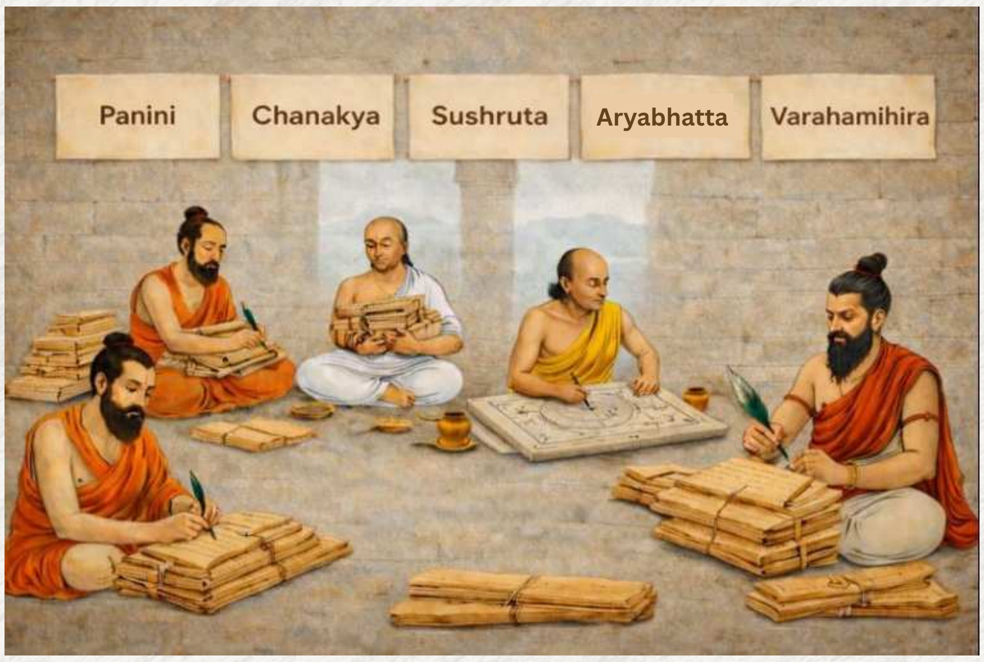

ज्ञान का पुस्तकों में परिवर्तन

एक बार जब लेखन का प्रचलन बढ़ा, तो ज्ञान को केवल स्मृति में ही सीमित नहीं रहना पड़ा। विचारों को अब लिपिबद्ध किया जा सकता था, उनकी प्रतियाँ बनाई जा सकती थीं और पीढ़ियों तक साझा किया जा सकता था। और जब विद्वानों ने चीजों को लिखना शुरू किया, तो उन्होंने केवल प्रार्थनाओं या अनुष्ठानों के बारे में नहीं लिखा। उन्होंने भाषा, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, कृषि और यहाँ तक कि वास्तुकला के बारे में भी लिखा।

शुरुआती महान विद्वानों में से एक **पाणिनि** थे, जो लगभग 2500 साल पहले हुए थे। उन्होंने **'अष्टाध्यायी'** नामक एक महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की, जिसमें संस्कृत भाषा के व्याकरण को विस्तार से समझाया गया था। पाणिनि ने शब्दों की संरचना और वाक्यों के कार्य करने के तरीके का वर्णन किया। आज भी कई भाषा विशेषज्ञ व कंप्यूटर वैज्ञानिक पाणिनि के इस तर्कपूर्ण और सटीक प्रणाली का अध्ययन करते हैं।

इसके कुछ समय पश्चात **कौटिल्य** नामक एक अन्य प्रभावशाली विद्वान हुए। जिन्हें **चाणक्य** भी कहा जाता था, उन्होंने **'अर्थशास्त्र'** नामक एक युगांतकारी पुस्तक लिखी, जो राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र पर केंद्रित थी। इसमें यह स्पष्ट किया गया था कि राज्यों का शासन किस प्रकार चलाया जाना चाहिए, करों का संग्रहण कैसे किया जाना चाहिए तथा शासक एक स्थिर व समृद्ध राज्य को किस प्रकार बनाए रख सकते हैं।

सैकड़ों वर्षों बाद **सुश्रुत** ने **सुश्रुत संहिता** की रचना की, जो एक चिकित्सा ग्रंथ है जिसमें शल्य-चिकित्सा की प्रक्रियाओं, चिकित्सा उपकरणों और चोटों व रोगों के उपचार के तरीकों का वर्णन किया गया है। इसी कारण विद्वान सुश्रुत को अक्सर दुनिया में शल्य-चिकित्सा के सबसे शुरुआती अग्रदूतों में से एक माना जाता है।

5वीं शताब्दी ई.पू. (जो लगभग 1500 से 1600 वर्ष पहले का समय है) में महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री **आर्यभट्ट** ने **'आर्यभटीय'** नामक एक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में आर्यभट्ट ने संख्याओं, गणित, ग्रहों की गति तथा ग्रहणों से संबंधित विचारों की व्याख्या की। उनके गणितीय सिद्धांतों ने बाद में न केवल भारत के विद्वानों को, बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों के विद्वानों को भी प्रभावित किया।

6वीं शताब्दी ई.पू. (1400 साल से भी पहले) तक विद्वान ऐसी पुस्तकें लिख रहे थे जिनमें एक साथ कई अलग-अलग विषय शामिल थे। ऐसी ही एक रचना थी **'वृहत् संहिता',** जिसे विद्वान **वराहमिहिर** ने लिखा था। इस अद्भुत ग्रंथ में खगोल विज्ञान, मौसम, कृषि, वास्तुकला, जल प्रबंधन एवं नगर नियोजन जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई थी। यह विज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान के एक प्राचीन विश्वकोश की तरह था।

दिए गए संकेतों की सहायता से अक्षरों को सही क्रम में लिखें

a) ध् अ टा यी ष् या

संकेत: वह वेदांग जो वेदों को सही ढंग से समझने के लिए प्रयुक्त भाषा और व्याकरण के नियमों की शिक्षा देता है।

b) मी ह् ब्रा

संकेत: अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त प्राचीन लिपि।

c) र्य ट आ ट् भ

संकेत: प्राचीन खगोलशास्त्री जिन्होंने ग्रहों और गणित के बारे में लिखा था।

d) णि पा नि

संकेत: संस्कृत को व्यवस्थित करने वाले महान वैयाकरण।

कवि का सामान्य ज्ञान

कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में अनेक विषयों पर जानकारी मिलती है। इसमें राजनीति, जासूसी, कराधान एवं यातायात के नियम शामिल हैं।

तो जब मैं पाटलिपुत्र में था, कौटिल्य शहर के सुचारू संचालन के लिए बहुत सख्त थे। उन्होंने व्यवस्था बनाए रखने के लिए **'नागरिक'** नामक एक शक्तिशाली अधिकारी नियुक्त किया, जो आज के 'नगर महापौर ' का प्राचीन संस्करण था। अगर कोई भी व्यक्ति शाही सड़क पर कूड़ा या गंदा पानी फेंकते हुए पकड़ा जाता, तो उसे जुर्माना भरना पड़ता था! व्यस्त व्यापारिक मार्गों पर अव्यवस्था से बचने के लिए अपने खुद के यातायात नियम भी थे। ज़रा सोचिए, हाथियों के झुंड की वजह से लगने वाले ट्रैफिक जाम के बारे में! आवाजाही को सुचारू बनाए रखने के लिए, **'अर्थशास्त्र'** में यह नियम बनाया गया था कि हर किसी को बुज़ुर्गों, भारी बोझ ढो रहे लोगों औरऔर शाही।

और एक बार जब मुझे सड़क पर एक सोने का सिक्का मिला, तो मैं उसे अपने पास नहीं रख सका! कानून के अनुसार, मुझे इसे शहर के गेट पर 'खोया और पाया' कार्यालय में ले जाना था, जिसका नेतृत्व 'शुल्काध्यक्ष' (टोल का अधीक्षक) करता था। ऐसी सभी वस्तुओं के लिए यदि वास्तविक मालिक वस्तु का सटीक विवरण दे देता था, तो उन्हें वह वापस मिल जाती थी। लेकिन अगर कुछ दिनों के बाद किसी ने उस पर दावा नहीं किया, तो वह खजाना सीधे राजा के खजाने में चला जाता था!

इससे हमें क्या पता चलता है?

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ग्रंथों को कंठस्थ करना या प्रार्थना करना नहीं था। विद्यार्थी और विद्वान भाषा, प्रकृति, चिकित्सा विज्ञान, भौतिकी एवं ब्रह्मांड के विषय में भी प्रश्न करते थे। उनकी जिज्ञासा ने ज्ञान की एक ऐसी धारा प्रवाहित की, जो आज भी वैज्ञानिकों और विद्वानों को प्रेरणा देती है।

सही विषय के साथ विद्वान का मिलान करें

स्तंभ A	स्तंभ B
पाणिनि	खगोल विज्ञान
सुश्रुत	व्याकरण
आर्यभट्ट	राजनीति विज्ञान
चाणक्य	चिकित्सा

शिक्षकों का कोना

इतिहास शिक्षण

पाठ्यपुस्तकों से परे इतिहास

इतिहास अक्सर दूर की घटनाओं की एक श्रृंखला जैसा लगता है, खासकर जब इसमें तारीखों और शासकों की लंबी सूचियाँ होती हैं।

हालाँकि, यह तब सचमुच दिलचस्प बन जाता है, जब हम छात्रों को यह दिखाते हैं कि अतीत ही असल में उस दुनिया की नींव है, जिसमें वे हर रोज़ जीते हैं। केवल तारीखों और राजवंशों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हम यह पता लगाकर रुचि जगा सकते हैं कि ऐतिहासिक हस्तियों ने उन समस्याओं को कैसे हल किया जिनका हम आज सामना करते हैं, जैसे शहरी नियोजन और पानी की कमी। पाठ्यक्रम को हमारे शहरों के भौतिक परिदृश्य से जोड़कर, हम छात्रों को निष्क्रिय श्रोताओं से इतिहास के जासूसों में बदल देते हैं।

इसका एक बेहतरीन उदाहरण 16वीं सदी में **केम्पेगौड़ा** के समय बेंगलुरु का विस्तार है। चूंकि यह शहर एक पहाड़ी पर बसा है और यहाँ कोई बड़ी नदी नहीं है, इसलिए **केम्पेगौड़ा ने झीलों (केरे)** और **तालाबों (कल्याणी)** की एक अनोखी 'सीढ़ीदार' प्रणाली तैयार की।

इन्हें 'शाही नहरों' से जोड़ा गया था, जिन्हें 'राजकालुवे' कहा जाता था। पानी के इन स्रोतों के पूरे नेटवर्क ने यह सुनिश्चित किया कि जब भी बारिश होती, तो एक तालाब या झील से छलकने वाला पानी अगले तालाब या झील में भर जाता; इस तरह बारिश का पानी बर्बाद नहीं होता था। तालाबों के संग्रह से कहीं अधिक, यह एक रणनीतिक प्रणाली था जिसने भूजल को पुनर्भरण किया और कृषि को सहारा दिया। इस विषय को कक्षा में लाने से छात्र इतिहास को केवल एक पाठ्यपुस्तक से बीते युग की कहानी के बजाय एक व्यापक विषय के रूप में देख पाते हैं।

इसे व्यावहारिक बनाने के लिए 'पड़ोस में खोज' गतिविधि आज़माएँ। शहरीकरण के कारण इनमें से कई प्राचीन झीलें विलुप्त हो चुकी हैं, लेकिन मूल **'राजकालुवे'** या पुरानी **'कल्याणी'** के अवशेष अक्सर अब भी मिलते हैं।

अपने छात्रों को अपने इलाके में इन विशेषताओं को खोजने के लिए कहें या ऐतिहासिक मानचित्रों की तुलना गूगल मैप्स से करवाएँ। जब वे समझेंगे कि उनके मोहल्ले की भौगोलिक बनावट 500 साल पुरानी जल प्रणाली के कारण थी और अनियोजित निर्माण ने इसे खराब कर दिया है, जिससे बारिश में बाढ़ आती है, तो यह विषय उन्हें अंततः दिलचस्प, प्रासंगिक और व्यावहारिक लगेगा!

इस तरह की अन्य गतिविधियों के लिए विजयनगर में जल प्रबंधन प्रणालियों पर माला कुमार द्वारा लिखित **'द मिसिंग रॉक्स ऑफ हम्पी'** पुस्तक पढ़ें।

पुस्तक समीक्षा

15 वर्षीय विग्नेश एस

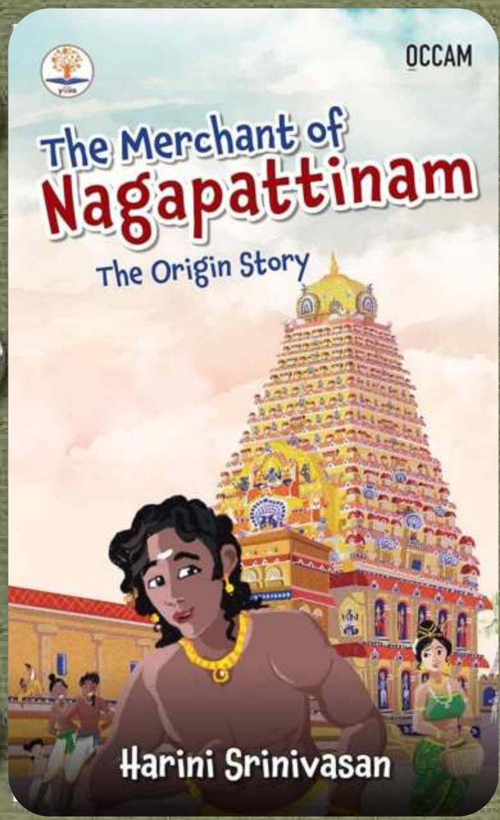

इंस्टाग्राम हैंडल:
@mangala.krishnamurthy.581

खरीदने के लिए यहाँ स्कैन करें

चेन्नई की यात्रा के दौरान,हम माउंट रोड पर स्थित पुराने और सदाबहार 'हिगिंस बॉथम्स' बुक स्टोर जाने के लिए बहुत उत्सुक थे! स्टोर पर जाने का मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा है और जब भी मैं चेन्नई में होता हूँ, तो मैं हमेशा वहाँ से किताबें खरीदता हूँ।

हमेशा की तरह, मैंने पाँच किताबें खरीदीं, लेकिन जिस एक किताब ने मेरा ध्यान खींचा, वह थी हरिणी श्रीनिवासन द्वारा लिखित 'द मर्चेंट ऑफ नागपट्टिनम, द ओरिजिन स्टोरी'। चूँकि मुझे ऐतिहासिक फिक्शन किताबें पसंद हैं, इसलिए मैं इस किताब को खरीदकर बेहद खुश था।

खैर, इस किताब को पढ़ने से पहले मेरी बहुत अपेक्षाएँ थीं। और यह किताब मेरी अपेक्षाओं पर पूरी तरह खरी उतरी! इसमें नाटक और रहस्य का बेहतरीन मिश्रण था।

चोल नाडु (चोलों द्वारा शासित क्षेत्र) का इसमें स्पष्ट चित्रण किया गया है। इस किताब की सबसे बड़ी खासियत इसके पात्रों का चित्रण था। हर पात्र की अपनी एक भूमिका थी। और कहानी में हर पात्र ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग भावनाएं प्रदर्शित कीं। उदाहरण के लिए, मुख्य पात्र पम्बन का पात्र गुस्सा, उदासी, दु:ख, खुशी, उलझन जैसी अलग-अलग भावनाएँ दिखाता है।

कहानी का सबसे प्रभावशाली पहलू यह था कि लेखिका ने घटनाओं को अलग-अलग पात्रों के दृष्टिकोण से देखने के बावजूद कथानक को बरकरार रखा। लेखिका ने पाठक की कल्पना के लिए कुछ कड़ियाँ अधूरी छोड़ी हैं। पहली बार कहानी पढ़ने पर किसी को कहानी के बाद के हिस्से में कुछ विसंगतियाँ लग सकती हैं। लेकिन एक बार जब आप इसे दूसरी बार धीरे-धीरे पढ़ेंगे, तो आप समझ जाएंगे कि हर एक बात का अर्थ है और सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है।

यह इतनी अद्भुत कहानी है कि इसे हर उम्र के लोग पढ़ सकते हैं और फिर भी यह उनसे जुड़ी हुई लगेगी। हर पात्र को इतनी गहराई और जटिलता के साथ चित्रित किया गया है। कुल मिलाकर यह एक दिमाग चकरा देने वाली किताब है! बस इसका पहला अध्याय पढ़ें, और मुझे यकीन है कि आप में से कोई भी पाठक एक सेकंड के लिए भी इस किताब को पढ़ना बंद नहीं करेगा।

YUVA की सिफारिशें

गर्मियाँ फिर से आ गई हैं और इसका सीधा मतलब है लंबी छुट्टियों के दौरान बच्चों को व्यस्त और जिज्ञासु बनाए रखने की परिचित चुनौती।

यदि आप छुट्टियों को एक साहसिक यात्रा में बदलने का तरीका ढूँढ रहे हैं, तो उन कहानियों को क्यों न टटोलें जिन्होंने भारत को आकार दिया?

1

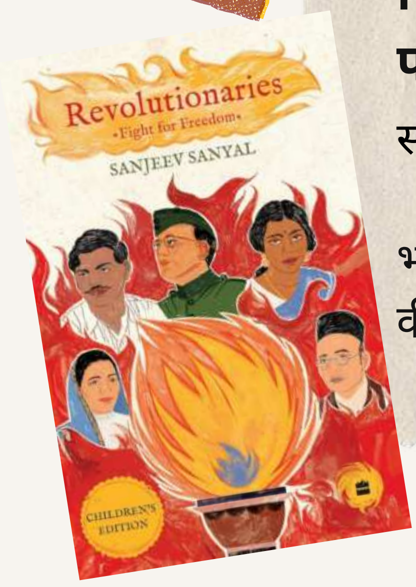

रिवोल्यूशनरीज:
फाइट फॉर फ्रीडम
संजीव सान्याल द्वारा

भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ।

2

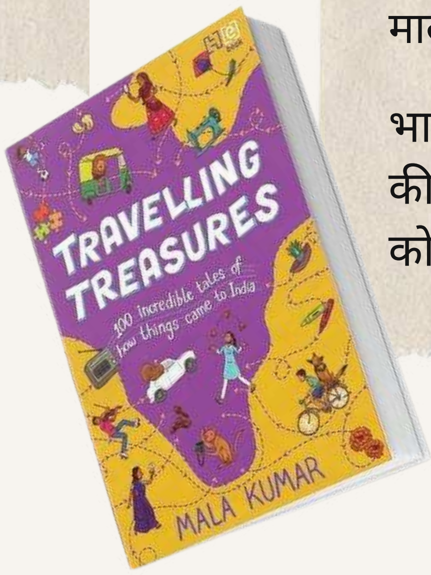

ट्रैवलिंग ट्रीज़र्स
माला कुमार द्वारा

भारतीय संग्रहालय की कलाकृतियों के पीछे की कहानियों और उनके ऐतिहासिक महत्व को उजागर करता है।

3

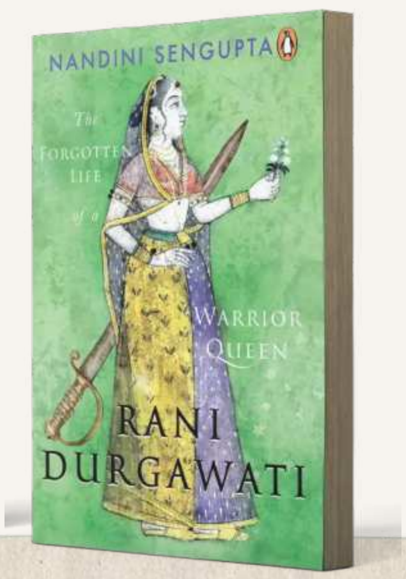

रानी दुर्गावती
नंदिनी सेन गुप्ता द्वारा

रानी दुर्गावती की शौर्यपूर्ण गाथा, एक योद्धा रानी जिन्होंने मुगलों का डटकर सामना किया।

4

ए होयसला एडवेंचर
नितिन कुशलप्पा द्वारा

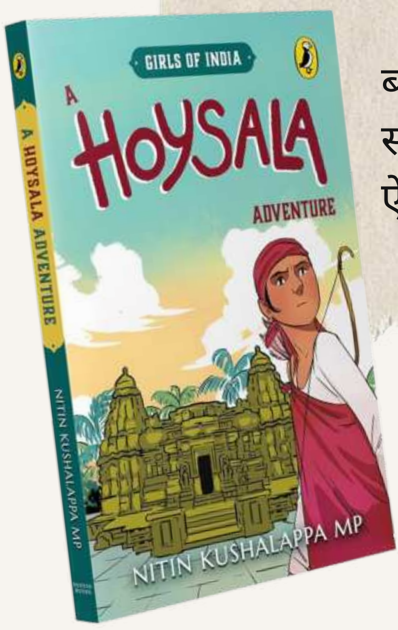

बारहवीं शताब्दी के होयसला साम्राज्य पर आधारित एक ऐतिहासिक गाथा।

उत्तर

विद्वान और विषय का मिलान करें

1. पाणिनि- व्याकरण
2. सुश्रुत- औषधि
3. आर्यभट्ट- खगोल विज्ञान
4. चाणक्य- राजनीति शास्त्र

आइए ब्राह्मी सीखें

1. रंग
2. बटन
3. गर्मी
4. सुरंग
5. माता

दिए गए संकेत का उपयोग करके अक्षरों को सही क्रम में व्यवस्थित करें

1. व्याकरण
2. ब्राह्मी
3. आर्यभट्ट
4. पाणिनी

आभार

भाविश अग्रवाल
संस्थापक एवं अध्यक्ष - ओला

राजलक्ष्मी अग्रवाल
अध्यक्ष -ओला फाउंडेशन

देवेश वर्मा
प्रमुख - ओला फाउंडेशन

हम **भाविश अग्रवाल, राजलक्ष्मी अग्रवाल, देवेश वर्मा और ओला फाउंडेशन** के आभारी हैं, जिनके उदार सहयोग से हमें कई प्रमुख पहलों को आकार देने में सहायता मिलती है।

OLA FOUNDATION

युवा आउटरीच सहयोगी

SRI SATHYA SAI LOKA SEVA GURUKULAM
SRI SATHYA SAI UNIVERSITY FOR HUMAN EXCELLENCE
CHINMAYA VIDYALAYA — KEEP SMILING — CHINMAYA MISSION
Friends of Tribals Society
isha VIDHYA Educating Rural India
WHO VR
NAAV AI

हमारे साथ जुड़ें

JOIN OUR MAGAZINE

JOIN OUR COMMUNITY